62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 952 Participant Code: 105

देखते ही स्तब्ध रह गया

पता नहीं ! क्या हुआ ? सूर्यमुखी बहुत खुशी से सूर्य को देख रही है। सारी चिडिया प्रकाश से शोभित है। वे आपस को देखकर मुस्कुराती हैं। मिट्टी गंधी हवा अब फैल रहा है। कितना सुन्दर दृश्य ! कीचड़ से ~~बट~~ बगीचा भर गया है। उस जल में पक्षियों खेल रहे हैं। बेहतरीन दृश्य है यह।

ओस का एक घर। ऊपर से वर्षा का एक बूँद अप्पु के चेहरे में पडा। तब उसकी अम्मा की आवाज़ उठी -

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"बेटा ... उठो। अप्पु अपनी आँखें खुलने लगा। बिस्तर से उठकर वह खिड़की से बाहर देखने लगा। सूर्यमुखी की रोशनी से उसका ~~बगीजा~~ बगीचा बहुत शोभित है। इस सुन्दर दृश्य देखकर वह बहुत खुश हुआ। वह तेज़ी से माँ के पास आया। माँ उसको देखकर बोलने लगी- "बेटा, बातरूम में चलो, समय नहीं है।" "हाँ माँ"- अप्पु बोला। वह ब्रेष और टूतपेस्ट लेकर बातरूम चल गया। तेज़ी से सब काम किया। अपना नया कपड़ा पहनकर वह खानेकेलिए बैठा। तब उसके बाप आये। "अरे अप्पु, तू कितना सुन्दर है यह कपड़े में!" अप्पु मुस्कुराने लगा।

तब अम्मा भोजन लेकर आयी। अप्पु वह पकड़कर खाने लगा। तब पिताजी बोला - "बेटा, आप तुम इस पैसा ~~खर्च~~ खर्च करने के पहले एक बार सोचना चाहिए। पैसा अमूल्य है। किसी काम करने के पहले दो बार सोचना चाहिए।" तब अप्पु बोला - "हाँ, पिताजी। मैं आपका बच्चा हूँ, मैं एक अच्छा लड़का हूँ।" अप्पु हँसकर खाने लगा। माँ उसका 'स्कूल बाग' ले लिया। अप्पु बोला - "माँ, मुझे कुछ भी चीज़ों को भी 'पॉक' करना है।" वह खाना रोक करके बाग लेकर अपने कमरे में दौड़ा। अपनी प्यारी कंबल, टी षर्ट, पान्स, डोइस आदि चीज़ों भी पॉक किया। फिर वह पूजा करने

केलिए पूर्व पूजा का कमरे में गया। राम कृष्ण को देखकर प्रार्थना प्रर्थना करने लगा। उसके बाद वह माँ बाप से बोलकर घर से निकला। बाप उसकी आर्शिवाद करके खेत में लौटा। माँ उसका खाना बाग में लेकर उसको चुंबन किया। अप्पु बहुत खुशी से चलने लगा।

यह अप्पु का पहला "डूर" है। उसके कक्षा की सारी बच्चे इसकेलिए आते हैं। अप्पु भी जाते हैं। इसके कारण वह बहुत खुश है। एक छोटा रास्ता है यह। सन्निहित पत्तियों को तोडकर वह खिलखिलाकर ही चल रहा है। ठंडी हवा उससे बाते करते हैं। वे भी खुशी है। पेडों की ठहनी हवा के साथ नृत्य करते हैं।

इस समय अप्पु के मन में अपनी हिन्दी टीचर सिंधु मॉम से पढाथा कविता याद में आने लगा। वह गाने लगा।

"कुदरत का दिया हुआ
ये अनमोल उपहार है
प्रकृति की दूसरी से
सजाया ये सारा संसार है।"

प्रकृति सुन्दरता से उसका मन खिल उठा। वह चलकर-चलकर अब "शेड" में पहुँचा। वह गाकर, नृत्य करकर, खिल-खिलाकर ही चलता है। 'स्कूलबस में आते तो अपना मित्र अरुण के साथ बैठना है। जाते वक्त 'सोस' खेलना है। एक ऐसक्रीम खरीदना है।' - वह सोचने लगा।

ये सब सोचकर वह ऊर्ज से चलने लगा। चलते - चलते कुछ दूर में वह मन कचोडनेवाले एक दृश्य देखा। वह देखते ही अप्पु स्तब्ध रह गया।

एक मध्य उम्रवाली

मध्य उम्रवाली औरती रोड आक्सिडन्ट होकर वहाँ पड गयी है। वह रक्त से आवरण हो गयी थी। बहुत सारे चोट उसके शरीर में है। अप्पु स्तब्धा से बाहर आया। उसको क्या भी करने केलिए कुछ भी पता नहीं। वह डर गया। उसने सोचने लगा - "क्या करूँ ? कौन है यह ? क्या मैं इसकी मदद करना है ? अगर मदद किया तो स्कूल में पहुँच सकता है ? तो इर ?" ~~उस~~ वह उदास होने

लगा। वह उसकी मदद न करने का निश्चय करके आगे चलने लगा। उसको पता चला कि किसी गाड़ी से पकड़कर ही आक्सिडन्ट हुआ था। क्योंकि उस औरत के पास स्कूटी जैसी गाडी न है। चुपचाप करके वह सीधे - चल आगे चलने लगा। तब उस औरत की आवाज़ उठी - "बेटा.. मदद करो" - एक छोटा सी आवाज उठी। यह सुनकर अप्पु स्तब्ध हो गया। क्योंकि उसको अपनी माँ की याद आयी। यह आवाज़ अपनी माँ की आवाज़ी की समान है। वह एक बार भी उस औरत को देखा। अब उसको उस औरत को छोड़कर चलने का मन नहीं है। 'अगर यह अपनी माँ है तो...' वह सोचने लगा। वह एक बार भी सोचा। अंत में उसने तय

किया कि उस माँ की मदद पहला करना है। वह अपनी बाग से कुछ पानी लेकर उस माँ को दिया। उसी हालत देकर वह बहुत दुखी हुआ। अपनी ही शर्ट से उसका चेहरा से रक्त ~~तोन~~ पोंछ पोंछा लिया। फिर उसने 'रोड' में खड़ा रहने लगा। तब एक रिक्षा आया। अप्पु अपनी हाथ दिखाया। लेकिन वह न रोका। अप्पु फिर भी खड़ा रहा। एक ही ~~रिक्षा~~ रिक्षा आया। अप्पु हाथ दिखाया। वह रोका- क्या?" "इस माँ को अस्पताल में पहुँचना है।" "नहीं, अस्पताल में पहुँचे तो पुलिस आएगा, केस में ~~पड़~~ पडेगा, मैं नहीं लेऊँगा" - इतना बोलकर वह चल गया। अप्पु को गुस्सा आया। कुछ देर भी वह खड़ा रहने लगा। अब उस माँ

की हालत बहुत बुरी है। अप्पु बहुत उदास बन गया। उस समय एक कार आने लगा। अप्पु आत्मविश्वास से भगवान का ध्यान करके हाथ दिखाया। वह गाड़ी रोका। वह तेज़ी से कारवाले के पास आकर बोला - " सार, इस माँ को अस्पताल में पहुँचना है, इनकी हालत बुरी है।" तब कारवाला बोला - " नहीं, यह नया कार है. उसकी रक्त सीट पर ..." " नहीं, मैं ~~देउ~~ देखूँगा, एक ही बूँद न पड़ूँगा "। अप्पु बोला। " लेकिन ....." कारवाले बोलने के व्यक्त अप्पु अपने बाग से पिता ~~देनेवाला~~ दूर केलिए देनेवाला 'एक हज़ार' का एक नोट उसको दिया। पैसा देखकर उसको खुश हुआ। वह पैसा लेने के पहले वह उस औरत को कार में ले लिया। अप्पु अपनी कंबल के ऊपर पर

उसको ले लिया। उस माँ की बाग भी ले लिया। अप्पु के हाथ मे वह पैसा है। यदि उस कारवाले छल करे तो? यह सोचकर वह न दिया। कारवाले कार आगे चलने लगा।

माँ का सिर अप्पु की गोदी में है। वह अब बोधरहित है। उसकी हालत बहुत बुरी है। उसकी रक्षा केलिए अप्पु प्रार्थना करने लगा। एक प्रार्थनागीत भी गाने लगा।

" हरे राम हरे राम
राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे "

यह गाते व्यक्त उसकी आखों से

आँसू आने लगा। यह एक अपरिचित व्यक्ति है। फिर भी वह रोने लगा। उस लडका की प्रार्थना कारवाला देख रहा है। उसके मन में भी मानवीयता की रोशनी फैलने लगा।

अब कार अस्पताल में पहुँचा। 'एमरजेन्सी वार्ड' में आया। तब कुछ लोग दौडकर कार से माँ को बाहर लेकर अन्दर लेने लगा। अप्पु तब उस कारवाले को पैसा दिया। पता नहीं! वह पैसा न माँगा। पैसा नहीं मानवीयता की प्रकाश अब उसके चेहरे में देख सकता है। वह कार लेकर चल गया। अप्पु जल्दी अन्दर पहुँचा। उसकी बाग दिया। तब एक सिस्टर पूछा, "क्या तुम उसका बेटा है? ये दवाएँ खरीदकर आओ।"

वह एक लिस्ट दिया। अप्पु अपनी पैसा से वे खरीदकार बाकी पैसा लाकर लौट आया। वह सब उस सिस्टर को दिया। तब डॉक्टर आया। अप्पु उस बाकी पैसा उसको देकर बोला 'सार, उस माँ की रक्षा करें।" डॉक्टर आश्चर्य से उसको देखकर बोला - 'बेटा, सब ठीक बन जाएगी"। इतना बोलकर वह ऐ.सी.यु. में चल गया।

अप्पु प्रार्थना करने लगी। उसके बाद वह एक सिस्टर से पूछा - "अब उनको कैसी है?" "ठीक है बेटा" - सिस्टर बोला। यह सुनकर उसको आश्वास हुई। वार्ड में वह सिस्टर के साथ आकर उसको देखा। उसका मन खुशी से खिल उठा। अब उस माँ को बोध आया।

वह अप्पु को देखकर मुसकुराने लगा। तब एक आदमी वहाँ आयी। वह उनका पुत्र है। वह रोने लगा। माँ बोलने केलिए प्रयास करती है। तब सिस्टर उसको रोका। इस व्यक्त में अप्पु वहाँ से भागकर बाहर आया। अपनी रक्त ₹ भरी केवल बाग में लेकर चलने लगा। तब एक सिस्टर उसके पास आकर बोला - " बेटा, तुम उनका पुत्र नहीं। फिर भी तुम इतना ही मदद किया। भगवान आपकी रक्षा करेगा। सच्चे समय में ही उसको यहाँ पहुँचा। तेरी कृपा से उसकी रक्षा हुई "। यह सुनकर अप्पु बहुत ~~e~~ खुश हुई। वह खुशी से आगे चलने लगा। अस्पताल से उसके घर तक कुछ दूर है। वह सारे बाते के बारे में सोच-सोचकर चलने लगा। समय शामको चार बजे

है। वह घर पहुँचा। माँ-बाप उसको न देखने पर दुखी हैं। उसको देखकर वे खुशी बन गया। व माँ दौड़कर उसको आलिंगन किया। बेटा, तुम क्यों 'लेट' हुआ? क्या हुआ? रक्त? दूर में क्या हुआ? पिताजी आये। "क्या हुआ अप्पु?" अप्पु सारी बातें बोला। अपने बेटे की मदद से एक जीवन की रक्षा हुई है - इस कारण से दोनों बहुत प्रभावित हुई। तब पिताजी बोलने लगा - 'हमारे जीवन में एक समय है, उस समय ~~में~~ में ही हम ~~हमको~~ हमारा जीवन शस्त ~~को~~ देख सकता है। इसलिए उचित चिन्ता से आगे चलना। वह मार्ग अगर कठिन है तो भी हम स्तब्ध न होना है। आत्मविश्वास से आगे चलना है।

बाप की इस बातें से अप्पु प्रभावित बन गया। अप्पु अब माँ-बाप को देखकर मुस्कुराता है। प्यार सुगंधी हवा अब फैल रहा है। सूर्यमुखी अब भी सूर्य को देखकर मुस्कुराती है। खग वृंद गीतों गाने लगे। प्रकृति रमणीय दृश्य! प्यार का खेद्दतशीन खुशबु..। सब खुश है।

हमारे जीवन एक समय है। उस समय हम उचित निर्णय लेना है। जिसको हमारे जीवन को बदलने की क्षमता है। इसलिए ध्यान से एक काम करना है। उस समय स्तब्ध न रहना। आत्मविश्वास से आगे चलना। ज़रूर सफल बन जाएगा।

62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 952 Participant Code: 105

"क्षणत्यागे कुत्तो विद्या
कणत्यागे कुत्तो धनम
क्षणशकणशश्चैव विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत"

– समय को उचित मान्यता से उपयोग करना चाहिए। पैसा पर नहीं मानवीयता पर ध्यान रहना है। तब मानवीयता की रोशनी इस दुनिया में फैलेगा। सब लोगों को ~~समभावना~~ एक ही भावना से देखना। सब लोगा हमारा भाई-चारा है।

"खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।

– महात्मा गाँधी

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).